नैतिक शिक्षा

नैतिक मूल्यों पर आधारित लघु चलचित्र

संगणक

अंग्रेज़ी

अर्थशास्त्र

नागरिक शास्त्र

जीवविज्ञान

संस्कार सृजन

संस्कृत

गणित

रसायन विज्ञान

इतिहास

नृत्य

हिंदी

Humane Endeavour
for
Moral Awakening

HEMA FOUNDATION

नैतिक जागृति
हेतु
मानवीय प्रयास

हेम दिशा

giving wings to YOUR dreams

HEM DISHA is a book to supplement the powerful message in the film. It is a collection of reading and activity materials under twelve categories. These are:

- **INTRODUCTION OF THE SUBJECT**
- **LIFE SKILL QUESTIONS**
- **QUOTES**
- **SANSKRIT SHLOKS AND SAMVAD**
- **MORAL STORIES**
- **POETRY**
- **INSPIRATIONAL PLAY**
- **GAMES / CROSSWORD / PUZZLE / SCRAMBLE**
- **PAINTING**
- **SONGS**
- **PLEDGE**

छोटे कदम..... बढ़ते कदम.....

After taking a pledge or a resolution, we need to begin our journey towards the value with small steps which move forward. These steps are small yet very significant.

Little activities involving children as individuals and as teams will inculcate qualities of responsible citizen, thus realizing the mission of Hema Foundation and vision for nation.

Children should get curious and engage themselves into activities which will make them assertive, confident, self-reliant and smart.

प्रेरक जीवन..... प्रेरक प्रसंग.....

A discussion about imbibing values from inspirational events of great personalities shall be conducted.

"वसुधैव कुटुंबकम्"-

जहां एक ओर पूरी वसुधा अर्थात हमारी पृथ्वी को एक परिवार के रूप में बांध देता है, वहीं यह भावनात्मक रूप से मनुष्य को अपने विचारों और कार्यों के प्रभाव को विस्तृत करने की बात कहता है।

Vasudhaiva Kutumbakam is a Sanskrit phrase found in Hindu texts such as the Maha Upanishad, which means "the world is one family."

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत् ।।

सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें, और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े।

May all be prosperous and happy. May all be free from illness.
May all see what is spiritually uplifting. May no one suffer in anyway.
Om peace, peace, peace.

Vision

हेमा फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य- ''बच्चों में अभिभावक, समाज व राष्ट्र के प्रति नैतिक जिम्मेदारी का बोध करवाना है, जिससे वे जागरूक एरा उत्तरदायी नागरिक बन सके।''

Hema Foundation aims to cultivate better and compassionate understanding in children of their responsibilities towards Self, Family, Society, the Nation at large, and help them become better human beings.

Mission

हेमा फाउंडेशन का लक्ष्य (मिशन) है- नैतिक मूल्यों की ज्योति को प्रभावी एवं सशक्त रूप में योजनाबद्ध और चरणबद्ध तरीके से अधिकाधिक स्कूलों, छात्रों व शिक्षकों तक पहुँचाएं।

Reach out to as many schools, teachers and students Imbibe and reinforce moral values in a planned and phased manner.

हम इसे कैसे संचालित करें?

अंतर्प्रतिक्रिया सत्र
5-7 मिनट

कथा-कथन
5-7 मिनट

फिल्म-प्रदर्शन
18-20 मिनट

संकल्प

संकल्प
2 मिनट

Part 1 & 2

राजकुमारी की दक्षता

इस कहानी में एक मूर्तिकार पूरे राज्य के सामने राजा को चुनौती देता है कि वे उनकी बतायी पहेली को हल करके दिखाये। राजा और राज दरबारी पूरी कोशिश करते हैं, फिर भी उस पहेली को हल नहीं कर पाते। ऐसे में राजा को परेशान देखकर उनकी पुत्री पूरी दक्षता के साथ उस पहेली को हल करने में लग जाती है... और वे उस पहेली को हल कर उस मूर्तिकार का घमंड तोड़ती है।

दगडू (कहानी संकल्प की)

आमतौर पर ये देखा जाता है– बच्चों के अंदर छोटी-छोटी परेशानियों को लेकर हीन भावना आ जाती है। जैसे कि अगर कोई बच्चा मोटा है, तो उसके मोटापे का मज़ाक उड़ाने पर उसके अंदर हीन भावना पनपने लगती है, जो उसे हर गतिविधि/क्रिया-कलाप में भाग लेने से पीछे खींचती है, जिस से वह आगे बढ़ने के कई सुनहरे अवसर खो देता है। हमारी यह कहानी ऐसे ही एक बच्चे की है, जो अपने नाम की वज़ह से उत्पन्न हीन भावना से घिर गया है।

रूप ईश्वर का

बचपन में हमें माँ-बाप से बहुत लाड़-प्यार मिलता है, वे हमारी बहुत चिंता करते हैं। हमारी छोटी-से-छोटी ज़रूरत का ख्याल रखते हैं। वे अपना मन मार लेते हैं पर हमारा दिल नहीं दुखाते हैं। कई बार हम उनके प्यार को सिर्फ़ कर्तव्य मान लेते हैं। हम ये सोचने लगते हैं कि ये तो उनका काम है, उनका फर्ज़ है... पर क्या ये सोचना सही है? हम इस चलचित्र/फिल्म के माध्यम से बच्चों को उनके प्रति जागरूक करना चाहते हैं।

अठन्नी की खुशी

बुढ़ापे में इंसान की एक कमज़ोरी या आदत बन जाती हैं कि वे अपने बच्चों से कुछ उम्मीद करने लगते हैं। वे चाहते हैं कि उनके बच्चे उनकी ज़रूरत, उसकी उम्मीदों को समझें और उन्हें ये छोटी-छोटी खुशियाँ दें और विडंबना देखिए बच्चों के पास देने के लिए सब कुछ हैं बस यही छोटी-छोटी खुशियाँ नहीं हैं, जोकि बहुत सस्ती है।

आलस्य का रोग

अक्सर देखा जाता है कि कुछ बच्चों में काम को लेकर टालमटोल करने की आदत पड़ जाती है। और फिर धीरे-धीरे वो आलसी बन जाते हैं। समीर भी ऐसा ही लड़का है, जिसकी टालमटोल करने की आदत से उसके माता-पिता परेशान हो जाते हैं।

अभय

डर जाना या डरा देना किसी की बहादुरी या कायरता का मापदंड कतई नहीं होता। डरनेवाला परिस्थिति से अनजान होता है और डरानेवाला परिस्थिति पर हावी, वह उसकी बुनी हुई होती है। लेकिन ऐसे में अक्सर एक इंसान अपने को कमज़ोर तो दूसरा खुद को सक्षम समझने की गलती कर बैठते हैं।

आशाएं

आशा या उम्मीद, किसी व्यक्ति का जीवन की घटनाओं और परिस्थितियों के मामले में सकारात्मक परिणामों में विश्वास है। आशा, सकारात्मक सोच से भिन्न है, जो निराशावाद को पलटने के लिए मनोविज्ञान में इस्तेमाल होने वाले उपचार या व्यवस्थित प्रक्रिया को दर्शाता है।

आदत

हर इंसान में कुछ-न-कुछ बुरा आदत होती हैं जैसे किसी को देरी से पहुँचने की, किसी को झूठ बोलने की, किसी को देर तक सोने की या किसी को खाना खाते हुए आवाज़ करने की आदत होती हैं... हम में से हर कोई अपनी किसी-न-किसी आदत को बदलना चाहता है। कुछ लोग इन आदतों को बदलने में कामयाब हो जाते हैं तो कुछ लोग अपनी आदतों से मज़बूर होते हैं.. खैर, आपकी कोई आदत जब तक किसी दूसरे के लिए कोई समस्या न पैदा करे तब तक तो ठीक हैं, लेकिन अगर ये किसी और की ज़िन्दगी को ज़रा-सा भी प्रभावित (गृहत्लिहम) करती है, तो इसे गंभीरता से लेते हुए, इसे बदलना ज़रूरी है, वरना ये आपको और आपके किसी अपने को बहुत बड़ी तकलीफ़ भी दे सकती है...

नैतिक मूल्यों पर लघु →

Part 3 & 4

सुकून... ईमानदारी में

ज़िंदगी में ईमानदार होना बहुत ज़रूरी है... तभी आप अपनी ज़िंदगी का पूरी तरह आनंद ले सकते हैं। ईमानदारी न सिर्फ़ आपके काम में बल्कि आपके व्यवहार में...आपकी बोल-चाल में... आपके सेहत के प्रति... हर प्रकार से होनी चाहिए। हमारी यह कहानी एक ऐसे बच्चे की है, जो एक छोटे-से लालच में अपना सुख-चैन खो देता है।

सादगी और सरलता

आज का समय इतना बदल चुका है कि हम आईडीयल या आदर्श की परिभाषा ही भूल चुके हैं। आज-कल हम उन्हें आदर्श मान रहे हैं, जो ख़ुद दिखावे की दुनिया में जीते हैं, जबकि हमारी भारतीय संस्कृति में ऐसे-ऐसे महापुरुष हुए हैं जिनके ज्ञान और प्रतिभाओं के आगे पूरा विश्व उनको नमन करता है। इस कहानी के माध्यम से हम यह बताना चाहते हैं कि आधुनिक होकर भी हम ''सादगी और सरलता'' के मार्ग पर चल कर अपने व्यक्तित्व को महान बना सकते हैं।

अनुकरण

हमारी यह कहानी, आज के उन बच्चों पर आधारित हैं, जो अपने सहपाठी से हर बात में प्रतियोगिता करते हैं। अगर एक छात्र पढ़ाई के अलावा भी कुछ करता है, तो दूसरा तुरंत उसकी देखा-देखी उसकी कॉपी (नकल) करने पर उतारू हो जाता है। वह ये नहीं सोचता कि वह जो करने जा रहा है, उसका परिणाम क्या होगा? वह जो करने जा रहा है या जा रही हैं, वे कर पाएंगे भी या नहीं?

संगति

दोस्त, हमारी जिंदगी में एक महत्वपूर्ण स्थान देखते हैं और वे हमारे अंदर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही तरह के परिवर्तन ला सकते हैं। तो ऐसे में सही चुनाव करना हमारे ऊपर है कि हम कैसी संगति में रहना चाहते हैं और कैसा इंसान बनना चाहते हैं।

जिज्ञासा

जिज्ञासा यानी कुछ नया जानने की इच्छा। यह कहानी है पार्थ की जो हर समय हर चीज के बारे में जानना चाहता है। हर बच्चे में एक विलक्षण प्रतिभा होती है, जो बच्चे में किसी भी काम के लिए एक जिज्ञासा उत्पन्न करती है। लेकिन पार्थ की जिज्ञासा ही उसकी प्रतिभा है, जिसे कुछ लोग समझ पाते हैं और कुछ नहीं।

समय का महत्व

समय कहने को तो तीन अक्षरों का एक छोटा-सा शब्द है, लेकिन इसकी ताकत के सामने सूरज-चाँद, धरती सब छोटे हैं। पृथ्वी जिसमें सारी दुनिया समाई है वह भी समय के साथ चलने के लिए बाध्य है। सोचिए अगर पृथ्वी अपनी परिक्रमा 24 घंटे की जगह किसी 25 घंटे तो किसी 23 घंटे करती तो क्या होता। जब इतनी बड़ी शक्ति समय के अनुसार चलती है, तो फिर हमारे और आपके लिए समय के अनुसार चलना कितना जरूरी होगा।

यश का ''लक्की टी-शर्ट''

हमारे देश में कई लोग ऐसे हैं, जो बेवज़ह कई चीज़ों को लक्की मानकर उसके पीछे लगे रहते हैं। चीज़ों के अलावा, कुछ लोग अंकों को, तो कुछ कलर को लक्की मानते हैं। मगर क्या ऐसा होता है? क्या कोई चीज़, जगह, दिशा, रास्ता, नम्बर्स या कलर किसी के लिए लक्की होता है?जानने के लिए देखिये ''यश का- लक्की टी-शर्ट''।

सेवा-भाव

ये कहानी है राजू की, जो कभी किसी को तकलीफ में नहीं देख सकता, वह लोगों की तकलीफ दूर करने के लिए हर संभव कोशिश करता है। ''नेकी कर... दरिया में डाल...'' -राजू ने इस कहावत को मन में लेकर हमेशा लोगों की सेवा की। उसने कभी सेवा के बदले किसी भी प्रकार की मदद की कोई उम्मीद नहीं की, लेकिन कहते हैं– ''इंसान के द्वारा किया गया हर काम का फल मिलता है...'' तो क्या राजू को भी मिला? यह जानने के लिए देखिये सेवा-भाव...

➡ चलचित्रों का सारांश

Part 5 & 6

सच का महत्व

जीवन में सच का महत्व जानना बहुत ज़रूरी है। आमतौर पर यह देखा जाता है कि इंसान अपने छोटे-छोटे फायदों के लिए झूठ का सहारा लेता है और उसे पता भी नहीं चलता कि कब ये झूठ उसकी आदत में शामिल हो जाता है! इस कहानी के माध्यम से हम यह बताना चाहते हैं कि सच को छुपाना और झूठ को गले लगाना... कभी-कभी कितना महंगा साबित हो सकता है।

साहस

परेशानियां हर किसी के जीवन में आती हैं। इस कहानी में भी दो बच्चे जो घर पर अकेले हैं, उनके माता-पिता एक पार्टी में बाहर गए हुए हैं और इसी मौके का फायदा उठाकर दो खतरनाक चोर उनके घर में घुस आए हैं। ऐसी परिस्थिति किसी के भी साथ हो सकती है। कहानी में क्या हुआ यह जानने के लिए देखिए साहस।

नज़रिया

भगवान ने हमें आँखें दी हैं- देखने के लिए....और दिमाग़ दिया है समझने के लिए, जिस से हम दुनिया को देखते और समझते हैं तथा अपनी एक धारणा बना लेते हैं जिसे नज़रिया कहते हैं। हमारी यह कहानी ऐसे ही दो छात्रों की है, जो दुनिया को अपने-अपने नज़रिये से देखते हैं। जिसकी वज़ह से उन्हें नज़रिये का महत्व पता चलता है।

आस्था

आज के इस साइन्स के ज़माने में, इस मशीनी युग में, ईश्वर पर विश्वास करना, कई लोगों के लिए बड़ा मुश्किल है। उनका कहना है कि ईश्वर कुछ भी नहीं करते, जो होता है या हम जो करते हैं, वे सिर्फ़ हमारी मेहनत से ही होता है, पर कुछ लोग आज भी ऐसे हैं, जो अपनी मेहनत के साथ-साथ ईश्वर पर भी विश्वास रखते हैं और प्रतिदिन नियम से, अपने काम के साथ-साथ ईश्वर को भी याद करना नहीं भूलते हैं, तो हम किसकी मानें! उनकी, जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करते या उनकी जो ईश्वर में अटूट विश्वास करते हैं। इस सवाल का ज़वाब तो हमें इस कहानी को देख कर ही मिलेगा।

परोपकार

कई बार दूसरों की मदद करने में जो ख़ुशी मिलती है, वह अपने लिए कुछ करने में नहीं। यह कहानी है एक ऐसी लड़की की, जो हमेशा दूसरों की मदद के लिए आगे रहती हैं, ऐसे लोग न सिर्फ़ अपने परिवार का, बल्कि सभी का दिल जीत लेते हैं।

स्वच्छता

अपने घर को तो सभी साफ़ रखते हैं, लेकिन अपने आस-पास, अपने शहर और देश को साफ़ रखने की ज़िम्मेदारी किसी और की समझते हैं। इसीलिए हमारे पास सफ़ाई करनेवाले हाथ सीमित हैं और गंदगी फैलानेवाले हाथ अनगिनत। क्या आपको नहीं लगता कि इन सीमित हाथों के कुछ और ऐसे हाथ भी जुड़ने चाहिए, जो उत्तरदायित्व लेकर इस स्वच्छता अभियान, इस संकल्प को आगे बढ़ा सकें।

सच्ची लगन

सच्ची लगन वह गुण है, जो व्यक्ति को उसके निर्दिष्ट लक्ष्य तक पहुंचाता है। सफलता के अन्य सूत्र भी हैं उनकी भी आवश्यकता पड़ती है, परन्तु जैसे दीपक जलने के लिए तेल सबसे आवश्यक उपकरण है, वैसे ही सफलता के लिए सच्ची और प्रगाढ़ लगन। मनुष्य में यदि इसका अभाव रहा तो सारे उपकरण रहते हुए भी वह कुछ नहीं कर सकेगा।

अनुभूति

कहते हैं भगवान सब जगह नहीं हो सकते। इसलिए उन्होंने माँ बनायी... दुनिया में बच्चे की पहली और सबसे बड़ी गुरु 'माँ' होती है। वह अपने बच्चे को हर खुशी देना चाहती है। लेकिन बच्चे की परवरिश करने में एक माँ को तकलीफ़ तब आती है जब उसका साथ देने के लिए उसका पति न हो। लेकिन फिर भी एक माँ कभी हार नहीं मानती। वह अपने बच्चे की खुशी और उसके सुनहरे भविष्य के लिए हर मुमकीन प्रयास करती है।

Part 7 & 8

दायित्व

अक्सर माँ-बाप अपने बच्चों के भविष्य के लिए चिंतित रहते हैं और उनके भविष्य की योजना बनाते हैं, लेकिन कुछ ऐसे बेटे भी होते हैं जो इतनी छोटी उम्र में इतनी दूर की सोचते हुए अपने बुजुर्ग माता-पिता के पूरे जीवन की योजना बना देते हैं। इससे बड़ा फ़र्ज़ कोई बेटा कभी निभा सकता है भला...

सद्-भाव (विनम्रता के साथ)

अक्सर जब व्यक्ति सफल होता है तो सफलता के साथ-साथ उसके पास घमंड भी आता है। कुछ लोग इससे दूर रहने की कोशिश करते हैं, तो कुछ लोग इसे जानबूझकर अपना लेते हैं। कुछ ऐसी ही कहानी डॉ. अविनाश की जो एक सफल डॉक्टर होने के साथ-साथ एक घमंडी इंसान भी है।

मृदुभाषा

अक्सर लोग ऐसे लोगों के पास रहना पसंद करते हैं, जिनसे बात करके उन्हें खुशी महसूस होती है, हमारी भाषा की मिठास ही लोगों को हमारी ओर आकर्षित करती है, फिर भी ना जाने क्यों कई लोग अपनी परेशानी, अपनी झुंझलाहट को अपनी भाषा में लाकर कड़वाहट उत्पन्न कर देते हैं।

कर्तव्यनिष्ठा

दोस्तों हमारे अंदर बड़ी ग़लतफ़हमी है...हम ये सोचते हैं कि हम अपने पैसों से कितनी भी चीज़ खरीद सकते हैं और नष्ट कर सकते हैं, क्योंकि हमने उसके पैसे दिये हैं। हम जिन संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं, उनको ख़रीदने के लिए पैसे भले ही हमारे हैं पर ये संसाधन पूरे समाज के हैं और इन पर सबका अधिकार है। आज भी एक बहुत बड़ा तबक़ा ऐसा है जिसे एक वक़्त का भोजन भी बड़ी मुश्किल से मिलता है। आज भी ऐसे बहुत-से गांव हैं जहां अभी तक बिजली नहीं पहुंची। इन बातों को जानते हुए भी हम बिजली, पानी और अनाज़ नष्ट करते रहते हैं, क्योंकि हम अपने और समाज के प्रति कर्तव्यों पर ना ध्यान देते हैं और न देना चाहते हैं।

धैर्य

समय, ताकतवर और साहसी को ही अपनी विरासत देता है। यह बिल्कुल सच है... लेकिन इस विरासत को बनाए रखने के लिए कुछ विशेष गुणों की ज़रूरत होती हैं। महाराणा प्रताप जैसे महान योद्धा के जीवन से ही हम सीख सकते हैं। अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए राजा होते हुए भी जंगलों में भटकना... घास की रोटी खाना... धैर्य का इससे बड़ा उदाहरण शायद ही कोई दूसरा हो सकता है।

गुड लक

तारीफ़... अच्छा लगता है जब कोई हमारी तारीफ़ करता है, लेकिन यह वह चीज़ है जो आसानी से नहीं मिलती। इसे कमाना पड़ता है, अपने काम से... अपने हुनर से...। अगर आज कोई तारीफ़ के लायक बना है, तो निश्चित ही उसने पहले कुछ कड़वे शब्द ज़रूर सुने होंगे।

संस्कृति

संस्कृति मनुष्यों के जीवन-यापन की परंपरागत लेकिन विकासशील शैली हैं। इससे मनुष्य अधिक सशक्त, प्रशिक्षित और विकसित बनता हैं। संस्कृति, देश की मूल्यवान सम्पदा होती हैं।अगर देश शरीर हैं तो, संस्कृति उसकी आत्मा हैं। संस्कृति हमारे और आपके पूर्वजों की देन है, इसे सहेज कर रखना हमारा दायित्व है, ताकि हमारे साथ-साथ आने वाली कई पीढ़ियां भी इसे जान और समझ सके। संस्कृति के नष्ट होने से सभ्यता की नींव भी डगमगा जाती हैं। संस्कृति के कुछ आधार होते हैं, जिनके कारण वह जीवित रहती हैं.. हमें उन आधारों को मिटने से बचाना होगा, तभी संस्कृति की यथार्थता परिभाषित हो सकेगी।

कुछ तुम बदलो, कुछ हम बदलें...

अकेला रहना इंसान के लिए संभव नहीं है, इसलिए उसे परिवार की ज़रूरत होती है। परिवार किसी एक से नहीं बल्कि सबसे मिलकर बनता है। इसे एक साथ बांधे रखना सभी की ज़िम्मेदारी है। ख्बुढ़ापा, ज़िन्दगी का वह पड़ाव है जहाँ से सभी को एक दिन गुज़रना है। अपने बुज़ुर्गों की जिन आदतों से आज आप चिढ़ते हैं कल शायद आपमें भी उसी तरह की कुछ आदतें आ जायें, जो हो सकता है आपके बच्चों को अच्छी न लगे। उसी तरह बुज़ुर्गों को भी छोटे-छोटे बदलावों को स्वीकारते हुए समय के साथ अपना नज़रिया कुछ बदलने की ज़रूरत है, जिससे उनका और उनके बच्चों का जीवन आसान हो सके।

हेमा फाउंडेशन, 'राम रत्ना ग्रुप' की सामाजिक गतिविधियों की एक परोपकारी इकाई है। बच्चों को उनकी संवेदनशील आयु में संस्कारी और नैतिक शिक्षा प्रदान करने की दिशा में एक अभिनव प्रयास है। हेमा फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य– ''बच्चों में अभिभावक, समाज व राष्ट्र के प्रति नैतिक जिम्मेदारी का बोध करवाना है'', जिससे वे जागरूक एवं उत्तरदायी नागरिक बन सकें।

मूल्य आधारित शिक्षा के महत्व को सुदीर्घ काल से स्वीकार किया गया है, किन्तु शिक्षा प्रदान करने की प्रभावी प्रणाली सुनिश्चित नहीं की गई है। दृश्य-प्रभाव सर्वाधिक प्रभावशाली होता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हेमा फाउंडेशन ने मानव-मूल्यों पर आधारित कुछ लघु-फिल्मों का निर्माण किया है। इन फिल्मों में सशक्त, सार्थक संदेश प्रदान किये गये हैं। प्रासंगिक विषयों पर उपयुक्त अंतप्रतिक्रिया सत्र, कथा-कथन, उसके बाद फिल्म-प्रदर्शन और समापन में संकल्प, यह बच्चों के दिल और दिमाग में विशिष्ट मुद्दों को पहुंचाने की उच्च प्रभावशाली प्रणाली होगी।

गीता परिवार की स्थापना 30 वर्ष पूर्व पूज्य स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी (आचार्य श्री किशोरजी व्यास) ने संगमनेर (अहमदनगर जिला) में की थी। इस का उद्देश्य था– संस्कार शिविरों और साप्ताहिक संस्कार-केंद्रों के माध्यम से सुसंस्कारों और नैतिक मूल्यों का विकास। यह कार्य पिछले 30 वर्षों से चल रहा है और भारत-भर में उसका व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ है। प्रतिबद्ध स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया गया है, ताकि वे भारतीय संस्कृति का प्रचार करें और उसे आत्मसात करने में बच्चों को सहायता प्रदान करें।

पूज्य स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी

मूल्याधारित शिक्षा के लिए कथा-कथन को माध्यम बनाने की संकल्पना गीता परिवार ने विकसित की और हेमा फाउंडेशन ने अपने कार्य के लिए उसी से एक सूत्र ग्रहण किया।

सर्व-सद्गुण-सम्पन्ना,गीता-भक्ति-परायणाः।
भवितुं जीवनेऽ स्माकं, जागृता बालका वयम् ।।
उत्थाने राष्ट्र धर्मस्य , विज्ञान दृष्टि माश्रिताः ।
विवेकानन्द मार्गेण, वयं सर्वे समर्पिता ।।

भारत विकास परिषद एक सेवा एवं संस्कार-उन्मुख अराजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्वयंसेवी संस्था है। यह मानव-जीवन के सभी क्षेत्रों (संस्कृति, समाज, शिक्षा, नीति, अध्यात्म, राष्ट्रप्रेम आदि) में भारत के सर्वांगीण विकास के लिये समर्पित है। इसका लक्ष्य वाक्य है- 'स्वस्थ, समर्थ, संस्कृत भारत'।

1967 से परिषद देशभक्ति गीतों का राष्ट्रीय समूह गान प्रतियोगिता कर रही है, जिसमें स्कूली बच्चें भाग लेते हैं। यह कार्यक्रम शाखा स्तर से राज्य और राष्ट्रीय स्तर तक आयोजित होती है।

गुरुवंदन, छात्र अभिनन्दन कार्यक्रम, प्रत्येक साल करती है जिसमें 30 लाख से ज्यादा छात्र भाग लेते हैं।इस कार्यक्रम का उद्देश्य है- बच्चों में अपने माता-पिता और गुरु के प्रति सम्मान की भावना जगाना।

वनबन्धु परिषद एकल अभियान ग्रामीण और जनजातीय भारत के एकीकृत और समग्र विकास के लिए प्रतिबद्ध है। इस अभियान का मुख्य गतिविधि है- एक शिक्षक विद्यालय (जिसे एकल विद्यालय के नाम से जाना जाता है) के माध्यम से भारत के सुदूर ग्रामीण और जनजातीय बच्चों को शिक्षित करना है।

एकल अभियान का लक्ष्य है- ग्राम विकास के दर्शन के बाद ग्रामीण और आदिवासी भारत से निरक्षरता को खत्म करने में मदद करना है, जो समाज के सभी वर्गों में समानता और समावेश के मापदंडों पर आधारित है।

चेतना में सहभागी:

- **संस्कृति संवर्धन समिति**
- **इंडियन डेवलपमेंट फाउंडेशन**
- **केशव सृष्टि भायन्दर** (राम रत्ना विद्या मंदिर, राम रत्ना इंटरनेशनल स्कूल)

हेमा फाउंडेशन

राम रत्न हाउस, ओएसिस कॉम्प्लेक्स, पी बी मार्ग, वरली, मुंबई - 400 013.

Tel.: 022-2494 9009 / 9142, **Extn.:** 108 | **Mob:** 72280 01342 / 7710030852

E-mail: admin@hemafoundation.org | **Website:** www.hemafoundation.org

Download Hema Foundation Mobile App! GET IT ON Google Play

Follow us on: f You Tube